

[illegible]

काहरे दो भाग १ ठारिमका बोकरा रकुद्रोग १ बुकभाग
 ४ इति गोतसितपिद्रुतुतवकयाल लेवकरता ॥ मि र बि
 याथाकै ॥ कयाल किबयथाकै ॥ रिगटाथाकै ॥ ॥ सुहा
 कोवृत्ता ॥ बुक ॥ श्रुति ॥ कोजरोः गारुधसितलेवकर
 तुतवसरिरदुरवयोभाकरीगाटाथाकै ॥ ॥ हरत
 कि ॥ सिधो ॥ गोधुर ॥ ऐतिदूर्तकरितातायानिमित्तशानु
 नवगिरकोरगाटाथाकै ॥ ॥ इतिमिररोगपुनिकार

श्रुजैयारभाग १ धैर १ नैसानैति सितमर्दनगर्नुविनारोग
 थाकै ॥ काफलकोबोको १ धैर १ श्रुजैयार १ ऐतिविद्रि नैसानै
 निसितमर्दनगर्नुः विनासरोगथाकै ॥ ॥ हिरंवी ॥ निर्वेति ॥
 श्रुजैयार ॥ विष ॥ पाषाणनेद ॥ सैधव ॥ ऐतिविद्रि नैसा
 नैतिसितमर्दनगर्नुतवाविनासरोगथाकै ॥ ॥ इतिवि
 नासरोगप्रतिकारः ॥ ॥ आधुयतपुल्लारजारफलत
 तपुल्लार ॥ आवकि कोदुलिः विजयाः ऐतिस्मकरपिद्रुतुका
 उ ॥ सितघानपिद्रुः ॥ अधवा महसितघानपिद्रुतवरकानि

सारधा केः हारधा केः ॥ दादिमका धीकरा ॥ सारधा करार ॥
जवानुः जाह फल ॥ आफु ॥ पाघान भेद ॥ ऐतिस्म करिविह
नुः तव घान दिनुः रक्ताति सारधा केः ॥ मोघो ॥ कुहो ॥ सारधा
राल ॥ आवकि कोडु लिः सिमर कोघो दो ॥ जावु फल ॥ वेल कोग
डः धार राका फल ॥ जाह फल ॥ विजया ॥ आफु ॥ पाघान भेद ॥ के
लाको फल ॥ कागल सिमो ॥ लवांग ॥ जवानु ॥ ऐतिस्म करिविह वस्व गरित
कर्तुः ॥ तव दधिसित घान दिनुः तव सर्व रक्ताति सारधा केः ॥ ये
ट सोलि रोधा कः ॥ पिय लाकि कोला ॥ मोघ राकि कोला ॥ धार रा
का फल ॥ मुसरि ॥ आवकि कोडु लोः तिगु हा को ज रो ॥ जि हो ॥

वैरा ॥ आफु ॥ ऐतिस्म औषध स्म कलि विहनुः तव घान दिनुः
सर्व प्रकार को रक्ताति सारधा केः ॥ आफु के लाका फल ॥ मर्व
जवानुः ऐतिस्म घान दिनुः रक्त ॥ पर दोधा कः ॥ जा मुनु को
खाला ॥ सिमल कोघो दो ॥ आफु ॥ जवानु ॥ पाघान भेद ॥ फल
पि ॥ ऐतिस्म विह वस्व गरित कर्तुः महसित घान दिनुः असा
धगा तुधा कः ॥ रक्ताति सारधा केः ॥ जाह फल ॥ आफु ॥ कपु
र ॥ कस्तुर ॥ धतूर विजया ॥ ऐतिस्म करि मिलार विहनु व
स्व गरित कर्तुः तव महसित घलनु ॥ ज्वला प्रमान घान दि
नुत ॥ स्वं भ होरः सर्वाति सारधा केः ॥ ॥ पाघान भेद भा

ग। जा। इफल। किं न्याकणार। धंतुरावीज। आधुभाग।
 सिद्धमुलि। ऐतिस्मकरिपिदुनुः महसितघानदिनुः अ
 धवागुडुसितघानदिनुः तबलोहिहडा न्याथाकः॥ कुहो।
 शुहो। ऐतिवृत्तीकरनुः महसितनदिनुः फुणरथाकः॥ निवा
 रथाकः॥ ता। जोघारः शुहो। समकरिघानुः निवारः फुणर
 थाकः॥।। रतिप्रतिस्तरप्रतिकारः॥।। अथपति
 रं प्रतिकारः॥।। सबांगपिहिवासिपानिसितबांतवमुतनाको
 डंगोफुटैः॥।। सिधो। सौचलोपि हिवासिपानिसिततिनीपेट
 घानुः तबनिरं धथाकः॥।। मुसाकिविष्टि। महसितना

हाताधालावतुः इति लेपगर्तुः घानदिनुः तबततदन
 रुनश्रावडा। जसोविसलोदे विमुसोनसैः तसोवोषधा
 देषिरुनघसे॥४॥ रतिनिरं प्रतिकारः॥।। अथबल
 हलोप्रतिकारः॥ बलकोजरोः वौरानिसितघानु तबअति
 कोषलहलोथाकः॥ कूशकोजरो वोलानिसितघानु तबबल
 हलोथाकः॥ जा। इफल। रक्तवनु। केतुफुल। कर्पूर। ऐतिस
 ममिलारघानदिनुः तबनिरंधथाकै॥ सिडुकोजरोपिहिपुराना
 चुकसितघानदिनुः तबगरथाकै॥ चित्ताकोजरोगोतसितघान
 दिनुतव गरथाकैः॥ डोगकोजरोगोतसितघानदिनुगरः

थाकैः॥लेककोदुधिलोकोजरोगौतसितपिद्रिषा
नडिनुःतवगरथाकैः॥लेवांग।काकडिकोजरोःडारिमको
जरो।धातेयोकोजरो।ऐतिपिद्रिगौतसितघानडिनुतवग
रथाकैः॥५॥॥इतिगरप्रतिकारः॥॥३॥उप्रहंउरोगप्रति
कारः॥॥विकडउलवांग।हरदो।वडी।गुगुल।ऐतिसमक
रिपिसना।वस्त्रगरितगनुःतवअरिडकातेलसि।तवलनुः
तववस्त्रगरितगनुःतवजातककोपोताउसादोथाकः॥॥वि
विराकोजरो।अरिडकोजरो।शुहो।देवारवनुन।पुर्नवा।विः
तो।जवानु।हनेदो।मल्लिवा।पिपला।गुगुल।ऐतिसमक

रिपिसना।तववस्त्रगरितगनुः॥नसितपिद्रिहावतुत
वगरुसादोथाकः॥वाडुकाउपजोगाडुथाकः॥अरिडको
तेलसितलावनुजातककोपोताउसादोथाकः॥॥इतिकु
हंउरोगप्रतिकारः॥॥३॥अथवित्फोटप्रतिकारः॥॥अमिसि
कवीज।काबोहलेडो।वासियानिसितपिसिघानदिनुःतवजा
तकवित्फोटनपिडो॥॥गोवा।छाकोजरो।चौला।निसितः
पिद्रिघानुतवजातककोवित्फोटनपिडो॥॥२॥वासियानिसि
तलपालिमहसितपिनदिनुवित्फोटनपिडोः॥॥०॥वोडाडुसि
निघानदिनुतववित्फोटपाकैः॥इहिगालाकोजरो।पिनदि

नुःतवविस्फोटपाकैः॥ गंगामारिफांडोयकावनुतववा
 नदिनुतवविस्फोटपाकैः॥ भैतिकोडहिमेकेलामुष्टिघातदि
 नुतवविस्फोटपाकैः॥ मधुधानुमधुरेमर्दनगर्तुःतवविस्फो
 टयोकोहोर॥ वातिजलाघातदिनुजतिघाततिहोर॥ सिम
 लकाबीजजतिघाततिहोर॥ सिउडुकाडागारुजानिगुरिया
 धूपकरिगलाबंधनुजतिगुरियाततिहोर॥ ॥ इतिविस्फो
 टप्रतिकारः॥ ॥ सुषहरसरोगप्रतिकारकहं॥ ॥ विपलाकिष्ठा
 ला॥ सुसरिसुकारचुर्तीगर्तुःतववस्वगरितगर्तुःदधि सितवा
 नादिनुहरसरोगपाकैः॥ गुड॥ विपलाघातदिनुतवहरस

वायीमिसिगवायीमसिखय
 रुदमस्यवमरीकमसीवकय
 रपुडरुदार्थिषायजाकपकडयीकहं
 रुदि॥ सावायीवडीधनभाप्र॥ द्वाधप्रदव

रोगपाकैश्चाहर्डीघृतमेभुटिघातदिनुतवहरसा
 धकः॥ तिल॥ भलायो॥ हर्डी॥ गुड॥ वित्तो॥ महसि
 तधानुतवहरसाधाकः॥ हलेडाकोचुर्तीःसिउडुः
 कादुधकिपुटसात७दिनुतवसुकारचुर्तीगर्तुः
 सोचुर्तीहरसाकाअंकरलायनुःतवहरसाधा
 कः॥ ॥ इतिहरसाप्रतिकारः॥ ॥

रदन्तरोगश्रीषधगुणकाकहे॥ स्रद्धहेगुलतोला॥ मरिचतो॥
संठितो॥ ककोलातो॥ पुष्कलमूल॥ मोथ्म॥ कर्कतशृंगितो॥
वो। सयाकंठतो॥ स्मशगमाडं वूर्णयायेजलतयावगुलिदिने
वयेगुलिप्रणथ्यगुहिवास्याकथासतयादनयातयेध्वयागु
णवास्याक। किलंतवगु। मुखरोगसर्वेनाश॥ हिंगूरस्रद्धया
यविधि॥ हिंगूकावरस्यपोरचित्तववोरेयामूत्रसयाकया
येघाट॥ ४३॥ स्रद्धहयुः॥ ॥ अथहरसारोगप्रतिकारकर्क॥

विपलकिफ्राला॥ मुखरिस्तुकायिवूर्तगर्तुनववस्त्रगलित
गर्तुदधिसितघातदिनुहरसारोगजाये॥ ॥ गुडविपलावा
नदिनुनवहरसाजाये॥ ॥ हरडावृत्तशुठिघातदिनुहरसा
जाये॥ ॥ तिलाभलायो॥ हरडा॥ गुडचित्तो॥ महसितघात
दिनतवहरसारोगजाये॥ ॥ विषखायाकोमारणश्रीषध
कर्क॥ सहसताकोफुलकालाभिडाकोजरोकुटिपिनदिनुतव
विषखायाकोजाये॥ ॥ पातलजरिकोजरोसेतवहरवाकोजरो
डुवैकुटिपियावनुनववकुलाकुकुलेखायाकोविषजाये॥ ॥

का बोरा हा। काला मिडा को ज रो र या लि पित दितु त व ह रि ता
 लेखा या को विष था कैः॥ ॥ लाडु का कु प थ गु ड डि तु॥ चितिका
 कु प थ नू त उ मा लि डि तु॥ वा सि खा ना का कु प थ ह रे डो वि सो पा
 ति सि त डि तु॥ आ मि ला का कु प थ ग डूं पो लि डि तु॥ ॥ रो टि का कु
 प थ आ प डि तु॥ आव का कु प थ म ह डि तु॥ म ह का कु प थ जि रो दि नू॥
 वि डाल का कु प थ म ह डि तु॥ वि डालु का कु प थ वि फ ला डि तु॥ उ मा
 लि डि तु॥ ह लि आ शा ग का कु प थः तिल गु ड डि तु॥ गु ड का कु प
 थ ता तो र डि तु॥ सि ध नि का कु प थ ल वां ग डि तु॥ उ मा लि डि तु

साय असन (पर्व) मिद आयम सी
 र द्वा आय वि र सा स्या, आय रू ग वि
 स र्ज क, लि प अस न र ना म ले सि, उ नि या
 व स न स त य सा ले के दा या वे
 य र रू ना न, आय, ध व द्वा उ म र ती को, आय अ रू ना न
 ज रि ना आय र न्द्र ग म, आय, नाय न
 कू डे ने वे या आय र द्वा द वे आय या रा
 पु ति र रु गी न दू आय म भ ड र नि व् था वा
 म र मि न वा र्थः, रु रि द्वा म नू स अ य
 र र व ले, पि वी दु को म अ य रू न के रू रू
 आय र द्वा वा नू द वे र्थ, आय दि न वा द
 आय र सि वी ग्र ना म रू रू को य अ य
 र रू न जी द्वा रू मा धि दाना य म व व न
 आय रू न या सा न न रू रू आय
 या र द्वा र्थ अ र्द द्वा यि का स्या रू आय
 र रू था आय रा न ना
 र्थ वा अ य र स वि, आय र्थ ना क
 नि दि ना व वा अ य र लि ना आय सी
 य वा नि मि स वा आय
 न स वा आय
 ध स वा आय

क० थकमम० च० ष० अ० त० थ० ति० न० थ० क० म०
 १० अ० गि० गि० शि० ज० न० गि० १० त० अ० स० न० क० य०
 १० अ० क० ज० गि० २० नि० नि० गि० १० अ० क० ज० स० न०
 १० क० र० सि० ड० क० ष० ष० अ० स० न० ले० गि० ५० क०
 १० क० न० न० ड० म० स० ५० क० ज० म० १० थ० अ० स० न० थ०
 १० अ० स० स० न० दी० य० १० द० व० ० अ० म० स० ड० अ०
 १० क० १० वृ० थ० १० क० १० अ० सु० यि० अ० य०
 १० क० २० वृ० १० १० अ० को० ना० अ० य० क०
 १० अ० २० वृ० १० २० न० वृ० अ० य० स० म०
 १० दी० ५० वृ० १० १० क० य० ल० क० यो० ना०
 १० क० १० वृ० थ० वा० २० १० स० न० नृ० अ० य०
 १० थ० १० म० ग० ता० स० दि० य० म० १० अ०
 १० क० १० को० १० १० क० य० इ० नि० क०
 १० अ० १० को० स० १० को० १० अ० नि०
 १० क० १० १० अ० ३० १० क० १० वृ० वि० वा० म० इ०
 १० वृ० थ० वा० १० १० वृ० नी० ५० १० वृ० को० ना० अ० य० इ०
 १० को० १० १० को० १० १० को० १० अ० य० १० को०
 १० नि० यि० १० वृ० १० यो० ग० १० अ० य०
 १० अ० १० १० अ० १० नि० मा० क० द० १० अ०
 १० को० १० १० यि० १० १० सो० वा० न० १० अ०
 १० अ० १० १० को० १० १० १० १० अ०

बासिषानाका कुपथः मह मलिवदिनु ॥ खांडका कुपथः म
हदिनु ॥ महिका कुपथः पाको हले दोडिनु ॥ हिंगका कुपथ
तिलदिनु ॥ तिलका कुपथः डावलादिनु ॥ डास्त्रि संगगयाका कुपथ
जायिफलदिनु ॥ खांड मन्त्रक पुरदिनु ॥ जारफलका कुपथः
जिरोदिनु ॥ जिराका कुपथ राडोदिनु ॥ राडोका कुपथः मस्
रोदिनु ॥ मस्त्राका कुपथः बासिषानिदिनु ॥ घृतका कुपथः इ
धषाडदिनु ॥ तलका कुपथः माप्पोपोलिदिनु ॥ गांजाका कु
पथः सेधवदिनु ॥ उमाका कुपथः मुलाका बीजदिनु ॥

मासका कुप घा गुड डिनुः॥ ॥ इति कुप घा प्रतिकारः॥ ॥ नाथ
शुक्ला पिष्टि घृत पचावतुः तव शिर मईनु तव नाथुरोग थाकै॥ कुसुमको फूल
कोर सः दुवा कोर सः वाकि कोडुड एति स्म कलि नास डिनु तव नाथुरोगः
थाकै॥ कटा ३ः पियलाः बैर दो जोः गु होः मरिवाः सिधोः एति स्म कलि
पिहूरा तेल घालि उ मालना भल को रे कुंः सो तेल नासा दितुः ना क
वाक दो थाकै॥ विफलाः मरिवाः पियलाः एति वूर्ता करि पिसना महसित
खानु नासा डिनु तव नाक को पिना स रोग थाकै॥ धुलि का सि डार या रः॥
सुडोः धाति उः राघोः राघाति मुरः सुडोः जवा तु मरिवाः पियलाः सिधो
सो वलो चिरा ह तो फूल मज राः एति स्म कलि पिसना तव वस्त्रग

लित कर्तुः गार घृत सित खानु तव का स उ प स्वा सो थाकैः॥ गुडः कति
कने का वो हरे डो गा पि घृत एति पिष्टि शुक्ला पु मारा खानु तव
का सो य स्वा सो थाकैः॥ आस का शत्रु जीर्ण कफ वात ज्वर चिखा हरणा औ
धिः॥ सौ हिला य के च कसा च कना कर्के का वै सो तो लाश्र हाट १० जुवानो
तो ला २ सुठितो ला नौ २ एत ना स व मिलार के हरिया मेर ख के मुख बंध
कर्के आच दे ना दे के भस्म करे फेर सो घात न विद्या नूत मो त्या नूत तोः
ला तो ला रस के खल कर्ता मात्रा तो ला १ प्रमात शुनु या न ना तो या रा सो ॥
अथ कर्ण रोग प्रतिकारः॥ ॥ निच को चूर्ण महसित खानुः कमल रोग या वुरो
ग थाकै॥ सिधोः वाका को मूत्र एति पिष्टि कात घालनु तव कर्ण सुलथाः

कै॥ विवरा कोर सञ्जु वला कोर सञ्जु घु कोर स। इति मिश्रत गरि कान
घालनु तव करी रूर था कै॥ जा मुना को माला वेल कि माला वारा
हा को दाते। सिधो। एति घालिते तेल पवा वना। सो तेल कान घालनु तव
कान या कदा था कै॥ कया सका विया। साल किलाल। कान्ति कि मरु। जे
स्त्रि मरु। भी मरु। एति स्म करि यि सना तेल घालिय वा वना सो तेल कान
घालनु। तव कान या कदा था कै॥ जायि फल। हरे डो। मो मो। वेल को विया
एति घालिते तेल पवा वना सो तेल कान घालनु तव कान शूर था कै॥ ॥
इति कर्त्तरी रोगाधिकालः॥ मुला को या को यात कार सकान घालनु तेल प
वा वनु सो तेल घालनु तव कान का सर्व वाधि था कै॥ इति कर्त्तरी रोगे॥ ॥

जस को जिवा फुरे वटि होत सको श्रौ घधिक रुं॥ ॥ घैर भाग। हरे
यो र रुडी भाउ रे तिले कंठ करि वूर्त्त गर्नु मधु साध मुक्षि गुटिका
गर्नु मुख धारिराखनु नातो या शि कि कुला गर्नु तव फुटि जिभ्रा क
म ल होयि॥ ॥ कचुर भाग। लवं। स्व वांग। जायि फल। निंव।
काका का विया भाग। रेति स्म कलि पीतनु तेल साध जिभ्रा लेः
प गर्नु तव या क दा जिभ्रा को यटि रो था कै॥ ॥ इति जिभ्रा पति को
ल॥ ॥ अथ समुद्र फल प्र नौ या म लिखते॥ ॥ अर्द्ध समुद्र फल निर्गुः
दि जो को षु जाइ॥ ॥ तथा समुद्र फल निर्गु दि डि जो वायु र लजा
यी॥ ॥

ॐ रिकामूत्रसंगडिजे अडा हा जाइ ॥ पुनरु रिकामूत्रसंगअं
जनकिजे न्यावाको फुल जाइ ॥ घाड संगखानुधातु जाइ ॥ पुन
खाड साधडिजे ज्वर पाइ ॥ तनू संगडिजे मूल पाइ ॥ जवानू सितडि
जे विरा जाइ ॥ पुनजवानो संगडिजे जोला जाइ ॥ स्मृड फूल हिंगवा
नडिनुपेतकाजुका जाइ ॥ हरडा स्मृड फूल एक ठाव रैलेप करेतो
सेतकुष जाइ ॥ घृतसंगरेपकिजे सेवैकु जापि ॥ मरुसंगलावः
नुसर्वघाडुथाकै ॥ त्रिवुरससंगदिजे भूर जाइ ॥ घृतसंगला
वनुभागयसिना जापि ॥ वजासितडिजे पित जाइ ॥ हरेडो

सितडिजे जासपितवसे ॥ त्रिवसंगघावेतो कल्यान होइ ॥ का
लाधतुरासंगलाये घारो कल्यान होइ ॥ मंगलगापि मुलवा
धि जाइ ॥ केजरिकारससंगडिजे कवलवीसु जाइ ॥ ॐ
भैसिके गोवरसंगलेपकी डिजे देहि सः ख होइ ॥ युनः कया
रिरससंगकानघालनुवडि रोनि को होयि ॥ लज्जरिकाग
रासंगघानुतेज होइ ॥ यिपीलीरसंगघानुभूरभस्य होइ ॥
लवांगसंगइदियेगानुगजकरी होइ ॥ त्रिवुरससंगघा
नुभानुनिको होइ ॥ दोरके मुत्रसंगडिजे उर्ध्वस्वामगार ॥

पुनः दोरिका मूयसितसुंजनकिजेरतौडिजार॥ मुंदि संगडिजेऽस्ति
 वस्ये होइ॥ निंबुरस संगडिजे आविजोडि होइ॥ सिवालिसंगदि
 जे सुंजनकिजे राजाय जीवस्ये होइ॥ एकवर्षीगारकागउत्सं॥
 गतिलंबुकरेस्तिवस्ये होयि॥ घरमूत्रसंग सुंजनकिजे लोकवस्ये हो
 इ॥ ऐइवस्तु घाटके कल्यात होइ॥ लोक सुंजन होइ॥ ऐहि वस्तु मधु
 संग घाये तो जिहा फुट होइ॥ समुद्रफल तिन बुला पाति पकाइ घान
 दिनु य घाला होइ॥ जनुया मधुधभात दो विभाग समुद्रफल बुल
 लु या निवानु अजीर्ण जाइ॥ घर मूत्र संग दान किजे मूत्र येत न
 इति समुद्रफल कर्म ४॥ ५

लघुशाल्मुले नवधर्मले न पुनर्नवाद्यते न यमसाधु
 कावर्मया अस्मात्सादरेत्॥ पर्मसाधुतिकार गुरिचित्तताव
 रिमुसरि मुदि भाग भगे या औनिरमुदि सक्त सेवाधिययी
 दीनवस्ये विंदु न हत्ये मुंडे॥ ॥ घोडा बुलिवडि जिरा घातुतव
 औलाजरो थाकै गुर्जे शुठो दुमालियनु तव औलाजरो थाकै॥ ॥
 अरिडको जरो कठारको जरो गुर्जे शुठो वितो ऐति दुमालिय
 नु औलाजरो थाकै॥ अरिडको जरो हरित कि वजो भुठो ऐति
 कोरसद्यः पित्तनु तवापितदिनु पित्त कि विषा ई देश॥ ॥

स्मकलपिसनावस्त्रगलितगर्भुगुडकायातिस्मितं धानुतव
 श्रौलाजरोथाकै॥ ॥ इति श्रौलाजरोप्रतिकार॥ ॥ बादल्यान्वाका
 जराहुमालिपीनुतवपित्तज्वरथाकै॥ यियलिमुंकदकिनाग
 रमोषोहरितकिराजवृक्षकिगुडिहेतिहुमालिकनपितुतव
 ज्वरथाकै॥ कुन्नाकोजरोवरकापयाकागशासुहोर्
 तिरुमालिपिनादिनुतवकफज्वरथाकै॥ मलीवपियवलाशुंरि
 काफकोश्रौलाशेतिहुमालिपातदिनुतवकफज्वरथाकै॥
 इति ज्वरप्रतिकारः॥

घर को धर सो सिधो श्रुति पिंरु बल गलीत कर नुं
वासि या निरया लिपि नदि नु न व डु प त्त लि था कै ॥ ३
सिमल का वो क रा पि सि या नि नि न पि न दि नु न व डु वः
तै रि था कै रा ॥ न्या श्रित का र्त्तिकः वै सा ष जे वू र ति मा
स डा डा नु का नि पी न दा नु न व डु प त्त लि था कै ॥ ० ॥ इ ति
उ प त्त लि पु ति का ल श ॥ ५ ॥ चो रू मारि को लार (गु डि सि
डो ॥ तो नि ति त बा नु न व व न को फि यो था कै ॥ ० ॥ का वो

हरे दो ॥ सि डुरि को दु धः न गारो रे ति गो त सि त प का व नु
पे त रे प ला व नु न व पे त कि फि यो था कै श ॥ ॥ सि धो सो
ब लो वि वि रा को र स ॥ न्या रू को र सः इ ति म नु कि ता तो कः
रि ना स दि नुः त व मु र्छा जा इ च र जा रि ॥ ॥ न्या फु न्के ला का
फु ल ज वा नूं म ल वा इ ति वि द्वि षा न दि नु त व र क्त पर
डो था कै ॥ मार वि ज या ॥ बा ड रे ति वि द्वि द धि सि त बा
नुः त व का ला न्य ति त्सार था कै ॥ पा षा न्मे द ॥ भा ग दि उ न्या
॥ इ ति स ॥ म क लि पि स नाः त व द धि त व ड धि ति त

वानुतववैशावनथाकै॥ तिहारयिहारथाकै॥ ॥ इति
अतिसालप्रतिकालः॥ ॥ अथवायुगुल्मप्रतिकारः॥ कहं॥
मरिचगोता ३ अथ स्रकावातकोरं सघालिपिसनातवनासः
तवअंधायेथाकै॥ हरितकिपिपला १ सौ अथर्वलयेतिसमः
कलिपिसनावत्सुगरितगर्भीः दुधिसितवानु अथवाताताः
पानिसितवानुतवपेतकावायुगुल्मथाकै॥ ॥ हिंगभाग १ व
जोअपिपला ३ भु ४ जवानुत ५ हरितकिभाग ६ चित्तोभा
ग ७ ऐतिमिरापिपिसनावत्सुगरितगर्भी महसितवानु

अथवातातापानिसितवानुतवपेतकावायुगुल्मथाकै॥
मलिवपिपला सिद्धो जिरोत्सोवागा हिंग ऐतिसमकलिवि
सना चतसितविदारप्रमारावानुतववायुगुल्मथाकै॥ ॥
॥ ॥ इतिवायुगुल्मप्रतिकालः॥ ॥ हिंगजवानो सिद्धो च
त ऐतितातापानिसितवानुतव अथगीर्णथाकै॥ सिद्धोभाग
१ जवानो २ चित्तो ३ अपिपला ४ स्र ५ हरितकि ६ ऐतिवोवध
तातापानिसितवानातवमन्दातिथाकै॥ पयचारणा जौत
रुक्तावनातवविहि अथवांगलावनाः अथवांगकिरुन्यथाकै

वेतकापातकोरस विपराधारि पित्तनातव अरिर मर्द
 नु अरिल का सर्वरोग धाके ॥ ॥ इति मन्त्राणि सोफू रोगप्रति
 कारः ॥ पीवाटल्यान्याकादूरा घृतसित घानु तव पित्त ज्वर धा
 कै ॥ पुरा नु गुड घृतसंग घानु तव पित्त ज्वर धा कै ॥ ॥ गहू का
 जरा पित्तना वस्त्र गलित गर्त भैसा दुध संग पवावे नाम तो तो
 पानिरे पकर्ता तव कुलंड रोग धाके ॥ सिधो पानि मर्द न करणी
 तव कुरंड रोग जाय ॥ ॥ इति कुरंड रोग प्रतिकारः ॥ ॥ उद्वेग
 वायुः विस्वनाम वायुः अक्षर नाम वायुः ॥ मिलं वनाम वायुः ॥ स
 र नाम वायुः ॥ ॥ इति पंच वायुः ॥ ॥ अस्त्रि संग गमा दा दो

इ पानि पिवे तोः तो वर वायु उउ पजौ हि डा डाय जे व आ आ उ घा डो
 होरः र वा म वि यु उ य जैः ता तो घानुः पाना उ वरः मु ठि म हि पि वे तो
 पित्त वायु उ य जै ॥ सु को ना सु उ मा फ्रा इ ध संग घात तो कु घ वायु उ य
 जै ॥ हा डा या ति स्नान करे तो प्र स्त ति वायु उ य जै ॥ तेल तु यरी ना गो
 होर ॥ रक्षाः आ धा सि सि वायु उ य जै ॥ अ मिरि म्प्र हि ति नै घा या र स
 वायु उ य जै ॥ ॥ इति वायु उ य ज प्रतिकारः ॥ ॥ हरित कि व ह डीः
 अ मला म लिव पि पला स्त्रि हि पि तो व जो प हिंग सि धो सो व
 चलो न गु र्थो ऐ ति स्म करि पित्तना प्र भात घानु तव सर्व वायु रु रैः
 ॥ पि पला ज वा नु सु हो सि धो हर डो ऐ ति स्म क पित्तना वस्त्र ग

लितगर्गातवप्रभातघानुतवसर्ववायुहरै॥१॥सुत्कारिश्च
स्त्रिकोगानुधाकै॥विषमारिचसुहोपिपलाकौडोःजलायासि
धोविजयाऐतिस्मकरिपिसनावस्वगरितगर्गातवरतिऐ॥२॥
प्रभातघानुतवसर्ववायुहरै॥मोतयासचविमलिवपिपला
सुहोऐतिस्मकरिपिसनावस्वगरितगर्गातवघानुसर्ववायुधा
कै॥अष्टांगप्रकारकोशूरधाकै॥॥इतिवायुरोगप्रतिकारशा॥०॥
हरितकिःपिपलिसोववैलऐतिस्मकालिचूर्णकर्तुःतवव
स्वगलितगर्नुःइधिकायानिसित॥अथवातातायानिसित
घानुःतवपेटकोवायुगुल्मधाकैः॥जवानुसुहोहरितकि॥३॥

ऐतिपिप्पुवानदिनुःतववायुगुल्मधाकै॥सुवाजंसेचो॥कालाजि
रोसेतोजिरोहिंगजवानुःऐतिस्मकरिपिसनुवस्वगरितगर्नु
अवलायुमाणाद्यतसितघानुःतवपेटकोवायुगुल्मधाकैः॥चित्र
कःमलिवपिपलजवानुसुहोवजोवाइल्यात्यानगुर्धोअजिरो
हरितकि॥सिधोऐतिस्मकरिचूर्णगर्नुःतातायानिसितघानुः
दनुःतववायुगुल्मधाकैः॥हिंगभागवजोभागरपिपलासुहो
जवानुपहरितकि॥चितोऐतिमित्ताइचूर्णगर्नुतववस्वगरि
तगर्नुःतवमहसित॥अथवातातायानिसितघानुडिनुतववा
युगुल्मधाकैः॥हिंगचितोपिपलाजवानुपटोलकचुरसि

धो मक्या मिलो सा जिघार सौ बलो डारि मका विजा जो धार अ
 रिडु को जरो ऐति स्म करि विस ना वस्व गरित गर्तुः विद्या ला पाइ
 प्रमान घात दिनुः सर्व पुकार को वायु गुल्म था कै ॥ जार फल भाग
 १ ल बाग २ विपला ३ मलिव ४ अंख दूती ५ घनु भाग २२ ऐति विद्रि वि
 डाला पाइ प्रमान घातुः तव वायु गुल्म था कै ॥ मलिव विपला जः
 बा घाल जिरो सुवांग हिंग से धो ऐति स्म करि विस तु विडाल
 प्रमान घातु तव वायु गुल्म था कै ॥ समुद्र फल से धो जवा धार ॥
 सो वर र विपला जवानु सुठो विजया ऐति स्म करि विस तु
 वस्व गरित गर्तुः ताता पाति सित घातु तव येत को वायु गुल्म था

कैश ॥ ॥ इति वायु गुल्म प्रतिकालः ॥ ॥ चतसि धो ऐति ता
 ता पाति सित घातु तव अजिती था कै ॥ सुठो भाग १ हरित कि र गु
 ड ३ ऐति विद्रि घातु तव अजिती था कै ॥ आर्दक से धो तातो भा
 त सित घातु तव अजिती था कै ॥ मनु मि था कै ॥ से धो हरित कि
 विवक विपला ऐति विद्रि वस्व गरित गर्तु ताता पाति सितः
 घातु तव मनु मि अजिती था कै ॥ ॥ इति मनु मि अजिती थाः
 कैः ॥ ॥ हिंगु सिंदूर अमला को जरो ऐति स्म करित मा कुषा
 न डिनु तव से क क रु निस्कं ॥ स्याल को मा सुते लय कार रा
 वनु तव से क था कै ॥ ॥ इति ससारि प्राप्रति कारः ॥ ॥

५ तिमलको जरो लुठो जवानु ऐति स्म करि पिदुनु श्रुवला
 प्रमान घानदिनु तव घरा रथा कै ॥ गार घृत सित घान घरा
 रथा कै ॥ नूत्र इह रोथा कै ॥ आवल्या के लवलु ॥ थार को फु
 ल ॥ गुराव सका फुल ॥ जिरो गुर्जो ॥ भगिरो ॥ ऐती स्म करि पि
 सनात वव स्वगार तगनु तव श्रुवला प्रमान मरु सित घा
 नुत श्रुति को घर हलो था कै मरीर पु वि हो ॥ ॥ श्रुति को
 करार को जरो ॥ अगाल ऐति मिरा र पिसनात व घानुत व श्रु
 ति को घर हरो था कै ॥ श्रुवला मो था ॥ पुनर्त्त वा ऐति स्म ॥
 करि पिसना मरु सित घानदिनु तव श्रुति को घल हरो

रति श्रुति पुकार ॥
 था कै ॥ ॥ रति घल हलो प्रतिकार ॥ ॥ हरे दा को फुल
 धाय रा को फुल ॥ आव को जरो ॥ जा मिर को रस ॥ ऐति मिः
 लाइ पिसना गार दुद सित पितदिनु तव श्रुति को फुल प
 ले तो विर कालि हो ॥ ॥ कृष्ण चतुर्दसिका दिन ॥ काला धनु
 रा को जरो कण्ठ वाध नुत व श्रुति को जा दोर हा ॥ वुवर सि
 कया ॥ धीर ये तो प्रसूति हो ॥ भगिरो ॥ का वो ह ले दो ॥ तिंम
 मो वो ऐति स्म कलि रकार पिना व स्वगारित गणात व कर
 वाते लसित घलाना ॥ घृत सित श्रुति न करनात व फुल
 था कै ॥ कान्ति कि मरु सित श्रुति न करना ॥ आधा श्रुति मिरि था कै

गार गौ तसित अंजन कर्तुं आधा विपरथा कै॥ वाकरा जलसि
 त अंजन कर्तुं आधा पाक दोथा कै॥ सप्त दोष घिता म अंज
 ना॥ ४॥ ॥ घोडा बुलिवरि अस्थि को दुद चोरि अंजन गर्तुः तः
 वर तो दोथा कै॥ कौडो बुक्क पकावनु तव अगाल ते जलाव
 तु तव तो नि सिताप सनु तव ते च अंजन गर्तु तव फूलः
 था कै ॥ रति नेत्र रोगे अंजन प्रतिकार ॥ ॥ तिल को ते
 ल रवो को रस गार को घृत विविग को रस विमिरा को बुक्क
 गुड संग वरि वा घि घानुः सर्व भूल था कै॥ कंठा कि भूर कफ
 कि भूर था कै॥ पेट कि भूर था कै॥ रति भूल प्रतिकार ॥ ० ॥

पराया कि गुदि दात का दोट का जा कर्तुं तव दत्त कर था कै ॥
 तनया को जरो दात का तोट का जा कर्तुं तव दत्त कर्तु था कै ॥
 सिसन कि जरो आदित्य वार का दिन को न बाधनुः तव ड
 त्त को क दो था कै ॥ रति डत्त क दो प्रतिकार ॥ पाषाण
 मेदा सुयारि वा निघा टिरया लनु तव घु र व रोग था कै ॥
 भेष्टा हु तो सव सुल रयारनुः तव चोरि भस्म कर्तुः सो
 भस्म करवा ते लसित भरीर मे मई न गर्तुः तव भरीर को लू तो
 था कै ॥ तिथी करवा ते लसित पिष्टि सरीर मे मई न गर्तुः तव
 अश्रां गी घटिरा था कै ॥ हरे दो हिग सिवारि रस घारि पि

सतातवनासदिनुतवश्चयस्मालधाकैः॥ ॥ रतिवरीपा
रयतिकारः॥ ॥ ॥ हरितकिः गोवरपाकारैः वनासुवागफुः
लारः ऐतिस्मकरियिसनागुडसितषादुः पुपरतातोषः
नियिनुः तववालाकोकीलघसैः॥ सुवांगः आगाजलार
कोडोजलार सुवांगः हिंगः ऐतिस्मकरियिसनातवगार
कामहीसतयिनदिनुतववालाकीलहनिघसैः॥ हिं
गजवानुः हरितकिः सुकागगडः ऐतिस्मकरियिसनातव
यानिघारि भरकरुमातिषादुः जातकपितदिनुतवघेदकी
लहनिघसैः॥ ॥ ॥ रतिवेदकीलघुतिकारः॥ ॥ जवपारभा

गामलितभागरपिपलाउदारिमकाविजाउऐतिरेकत्रक
रियिसनागुडसितषादादिनुः तववालाधकारोधाकैः अपि
दकीलहनिधाकैः किंलघसैः सुन्नरवैगाः ॥ घुरिकिलावि
तोयोकिंकतुरः अथवासाहाडाकिलिडिः अथवाकथुराको
उदः अथवातिलतवगारदुधरगावनुतवनिकोकरैः पिस
नुः तवजातकतलुवावटावनुः तालूतवलावनातववाला
धकालोधाकैः॥ घुरिकिंडाउगोवोवतनामोकापितः रव
नारेतिपिद्रिवालामानदिनुतववालाधकारोधाकैः॥
रतिवालाधकारोप्रतिकारः॥ ॥ ॥ शुंथाकोवर्रागुडः ल

वारि ना सदिनु तव वा इलि धा कैः॥ मरुत्तौ वरो विविरा को
रस धारि पिसनु तव ना सदिनु तव वा इलि धा कैः॥ सुजुर को
मेव वोरि ना सदिनु तव वा इलि धा कैः॥ घृत वित्त को बीज अग्रि
बालि ठे दला गरि धुवार पितु तव वा इलि धा कैः॥ ॥ रति वाः
इलि प्रतिकारः॥ ॥ केवु वा को भस्म विफला ऐति विद्रि वस्त्र
गरित गर्नु घृत सित भग मेले प गर्नुः तव भग को रोग धा कैः॥
छजे पाल तिलो तुष्टो जिरो छैर सिधो जवानु उडं ति फटि ग्री
ऐति स कलि पिसना ऐक ति बु फल र सनु परना तव धान

दिनु तव जलं डर रोग धा कैः जस कन अजीर्ण होरः पेन
टा डि हि र हे उ जो उ धो न ह वैः सो विष म अजीर्ण भनूः तातो
पानि सित नून गु मा लि पिनु दितु तव पे ट को तिरं ध धा कैः॥
मौ क को ज रो पित नदिनु तव पे ट को तिरं ध धा कैः॥ ॥ रति व
ट को तिरं ध प्रतिकारः॥ ॥ हरिन को सिंग सहस्र मे डः रांः
धनि वी शि ऐति वा सि पानि शे दूनु तव पित नदिनुः तव शरी
र कि ब्य कारि धा कैः॥ ॥ छैर को वी करो को दु सला को छाला
वास क का वी कराः सिमल को फुला ऐति वूरा करि म हिः
सित धान नदिनु तव उ वल दो धा कैः॥ जा मुना का वी करा अ

यकावोकरा ऐतिपिद्रिवा सिपा नित्तवानदिनुतवउषर
दोथाकैः॥ चकारिथाकैः॥ ॥ इति चकारिप्रातिकारः॥ ०॥

उतिसभागा अरिउकाजराभा १ घौउकुमारिकिगुदिभागा १ वजो
भा १ सिधोभा १ लोहिबुत्ताकाजरा १ ऐतिपिद्रिवाकाकाउउसि
लेपगर्तुः तवपितासरोगथाकैः॥ भलायाभागा १ अजैपाल १ शु हो ॥
निम १ राजवृक्षकिगुडि १ ऐतिपिति नैसातौनिसितलेपगर्तुः तव
पितासरोगथाकैः॥ ॥ इति पिनासरोग प्रतिकारः॥ ॥ हिंगभागा १॥
जवानु १ सु हो १ सोववलो १ जिरो १ जवाघार ऐतिपिलारपिसना
तव जवका माउसितवानदिनुतवहयावहथावै १ को सोवहथा

वेदकिवहथाकैः १ नाभिकिवहथाकैः॥ ॥ इति हिंगादुकवृत्ता
वहउं प्रतिकारः॥ ॥ हिंगकुलायोभागा १ सिधो १ सु हो १ महिद
१ पिपला १ जवानु १ जिरो १ ऐतिवोषपियिसनाः यहिलिग्रासघृत
५ सितविरालापाड १ प्रमानवानदिनुतवभोगलागैवेदजूरथाकैः॥
बाधु सर्वजूरथाकैः॥ ॥ इति हिंगादुकवहजूरप्रतिकारः॥ ॥ बाइल्या
४ त्याको वूनंघामघालनुतवघाउथाकैः॥ पिउकुमारिको जरो १ हरेडो
वासिपातिसितपिसनुतवपितदिनु अस्त्रिकोथनि लोथाकैः॥ ॥
आवका कोरलाउदघोटिपितदिनुः नडायो १ मरु १ यो नलागौ १ विष
न रागौ ॥ ॥ पिपला १ कार्त्तिको मरुसितवानुतवजररोग १ थाकैः॥

लेवि। जाइय। ॐ त्रि। चित्तो भाग। ऐति सर्वकार कूर्त कर्तु
तव वस्त्रग रित कर्तुः रत्नरा। तिरु इर धातु सर्व वायु ह
रै सर्व तोम निवारयेत् ॥ ॥ इति मैलवर सनामः ॥ ॥ अथ
रिह कोजरो। वरु कोजरो। विहिं। कटाश। माल को नो। गु
जो। न गुधो। पुर्न वा। सु हो। ऐति स्म कलि रुमालि काथ क
रनु तव पि नदि नु वा द ज्वर था कैः ॥ कै र वाः न गुधो। सु हो।
क इ किः वि ता यितो। वरु। ध नि ड। ऐति वो य ध र मालि यि
न दि नु। तव पि न ज्वर था कैः ॥ र वो। सु वो। क सा इ सो वि
र डो र। त क फ ज्वर को प थ्य ॥ ॥ अथ विभु

वि डु प वारः। विल को गु डुः पुर्न। रुमालि काथ कर नु ॥
तव प्रह सित धा नदि नु तव सि यालि वि सा था कैः ॥ म डु प
त थ कैः ॥ ला या का सा तुः म हः वा डु ऐ ति पि हि मू ल का याः
नि सित धा नदि नु तव सि लि वि सा था कैः ॥ र अ लै वि। ल वां
ग। ला या का सा तुः कां गु ना का सा तुः श्री घं डुः पि प लाः ऐति वो
ध कूर्त ग र्नुः प्रह सित धा नदि नुः तव सि यालि वि सा था कैः
ल वां ग। जा र फू ल। पु थो। वा ति ल वां ग। वा ति वा नि ति त यि त
दि नु तव सि यालि वि सा था कैः ॥ सि म ल को वो को। या नि पि
त पि न दि नु सि यालि था कैः ॥ क ला व का सा तु। ध त म ल

धडा। येति वा नित्यया लिपि नुः तव उ घल दो था कै। ॥१॥
घैर को वो को। सि मल को वो को। ऐति कूर्त क लि मह सितः
सानु तव उ घल दो था कैः॥५॥ हर रखा को दूरा मरु। घाडु सि
त घान दिनु त व उ घल दो था कैः॥१॥ जानु ना का वो को। आ
व का वो को। ऐति विद्रि वा सि पा नि सित वि न दिनुः त व उ
घल दो था कैः॥ मा वो भाग। ल वांग। आर फल। अलै वि।
ऐति स्म कलि कूर्त कर नु घाडु सित घान दिनु त व सि पार
वा कैः॥ ॥१॥ हरे दो। गिरो। धार रा को फल। आ फु। घाडु। ऐति
स्म कलि वो रा सि सित घान दिनु त व सि पार वि सा था कैः
॥१॥ ॥१॥ सो जा। कार्ति का वै सा ध। जे व। या ति मा। स श टा बु का

नि। यनु। सि प लि वि सा था कैः॥ घैर। क। ल को दि। को म
दो। ल वांग। मरु। घान दिनु त व उ घल दो था कैः॥ ॥१॥ दु गल
भाग। मलि। वि। वि। भुं ठि। तुं द ग। वे घ। धि रा कि शी ला।
ऐति ऐ कं व कर पि द्रु नु त व न ख ग र त क नु आ नि म ह वा ली
पि द्रु नुः धु ला मा नि र ये वा वे। घानु वा ला जा त क र ति। वि द्रु
त व र क व दो था का। स वि पा त था क पे ट। उ डी वा का। ॥१॥
ओ न्या लु को र सः सी लं गि व द को र सः ऐति म लो र वि न दि
नु त व उ घल दो हो र। वि न्त स्यो ति स र। पे न को नि ना ड था का
॥१॥ वि। मा। ल व। ऐति वा सि भ स्म क। नु त व रा त। घान